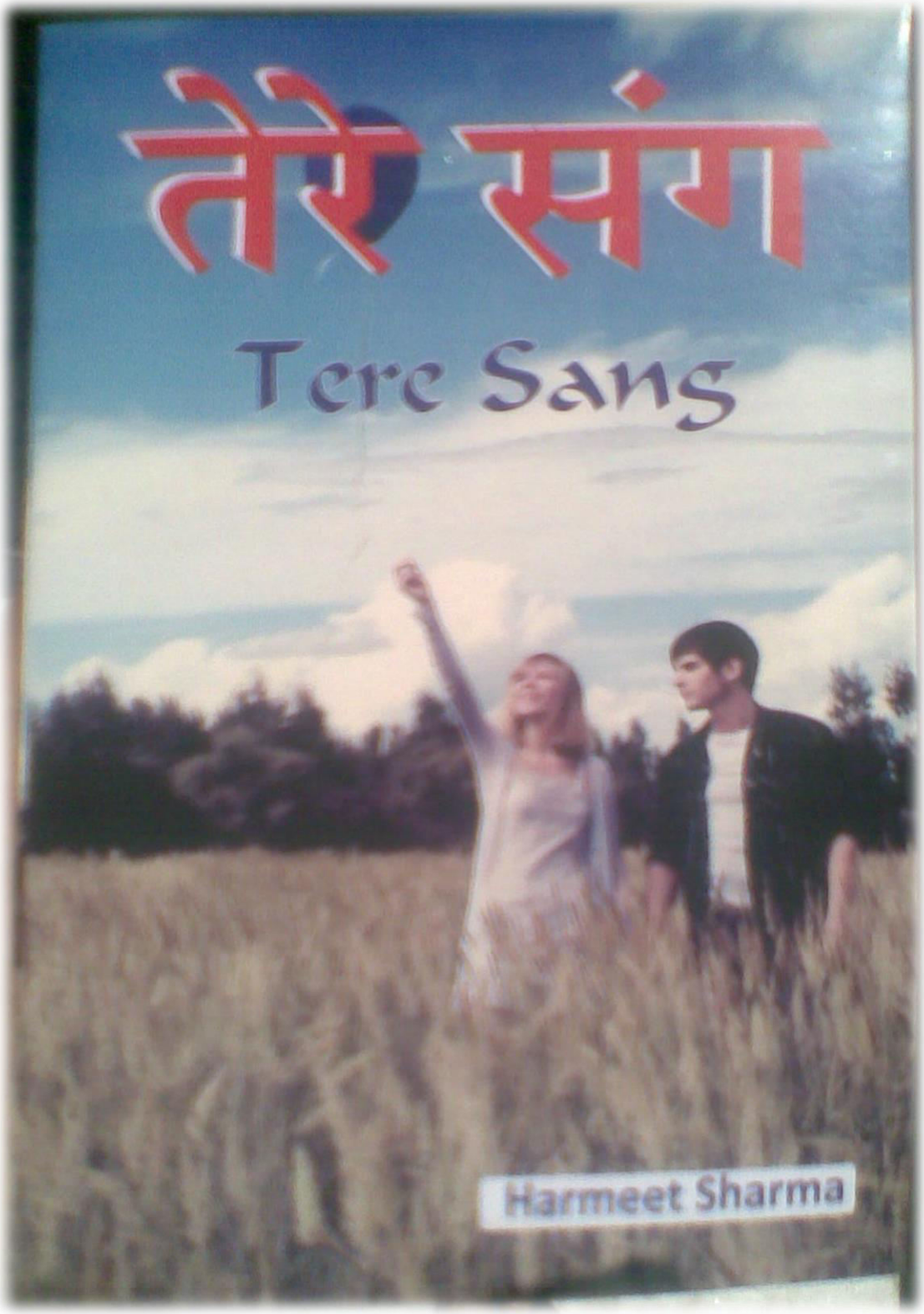

Front Cover

भाग - 'क'

"तेरे-संग"

~ कवि - परिचय ~

कवि नाम : हरमीत शर्मा

गुरु नाम : शिवानी जैन जी

पिता नाम : श्री नफे शर्मा

माता नाम : श्रीमती बिमला देवी

जन्म स्थान : गाँव - पाई-भाणा , जिला - कैथल , हरियाणा

जन्म तिथि : 1 जनवरी 1995

शिक्षा स्थान : बी.प.आर. पब्लिक स्कूल ,हरियाणा ,ग्रीन लैंड कॉन्वेन्ट स्कूल, लुधिआना

कॉलेज व यूनिवर्सिटी : कमला लहोटइया सनातम धर्म कॉलेज , लुधिआना

भाषा : हिंदी , संस्कृत , पंजाबी , अंग्रेजी

कविता विषय : हर विषय पर

Contact to the Poet : Call - 85670-23906

www.facebook.com/poet.harmeetsharma

रचनाकार के बारे में

"तेरे-संग" किताब के रचनाकार हरमीत शर्मा जी है ! कविता लिखना उनका ईस्वर का दिया हुआ एक तोफा है . जो वो हर पल कहते है ! उन्होंने अपने ज्ञान समबन्धी अपने गुरु जी व अपने ईस्वर का नाम लिया है !

"तेरे-संग" किताब से वो अपनी कविताओं को हमसे रु - बू - रु करवाते है !

इस भाग में उनकी अनेक कविताएँ है . जो भिन्न भिन्न विषय पर आधारित है . साथ उनके अपने कुछ अनुभव है !

वो पाठकों को कहना चाहते हैं की , इस से तुम्हारा मन आनंदित होगा , व कुछ नया पता लगेगा , मन को शान्ति और ख़ुशी मिलेगी !

वो हमेसा अपने अध्यापकों के अधीन रहे है . जिस से उन्हें हर पल कुछ नया सिखने को मिला !

हरमीत शर्मा का मानना है की ईस्वर का दूजा रूप हमारे अध्यापक है , जो हम पर ज्ञान की वर्षा करते है !

विषय - सूचि

1. कुदरत
2. याद एक
3. हिन्दी भाषा
4. काली घटा
5. अपनी राजनीति
6. आधुनिक वतन
7. चलते रहो
8. पैसा
9. गुरु सर्वप्रथम
10. बेटी
11. एक श्याम
12. वो पल
13. तेरे बिन
14. प्रेम एक दर्द भी
15. तेरी याद फिर आई
16. कुछ यूँ होना
17. याद तुम्हारी फिर आई
18. प्रेम
19. बिन तेरे

कुदरत

हे ईस्वर , तेरी बनाई हुई यह धरती कितनी ही मीठी ,

कितने ही रंगो से रंगभरी है

कोई यहां इसे मीठी कहता , तो कोई नमकीन

कोई रंग गुलाबी खत , तो कोई रंग नारंगी

हे ईस्वर , तेरी बनाई हुई यह धरती

कितनी ही निर्मल , कितनी ही उज्जवल

ताप्ती गर्मी में चन्दन वृक्ष तुम्हारा

हमे ठंडी हवा देता

बिन पानी किसी प्यासे को ,

तुम्हारा नील अंबर से बरसता पानी ,

किसी की प्यास भुजाता

रंग भरे पक्षी तुम्हारे हे ईस्वर

नील गगन को और सुन्दर बनाते

तुम्हारे चौपाये , हे ईस्वर

यहां किसान , गरीबो की मदद करते

हे ईस्वर , तुम्हारी यह सृस्टि सारी

इस धरती का सोलह श्रृंगार करती

पानी का झरना गिरता हुआ मध्यम - मध्यम आवाज करता ,

पहाड़ो को चीरती गंगा माँ , भारत देश की माँग भर रही

हवा यह कुदरती सारी

खेतो में कंघी कर रही

हे ईस्वर , तेरी बनाई हुई यह धरती कितनी ही मीठी ,

कितने ही रंगो से रंगभरी है

याद एक

"याद - एक" कविता एक ऐसी याद से भरी है .जिसमे

एक लड़की ससुराल जा कर अपने बचपन के दिन याद करती है !

बाबुल जी जब मैं पैदा हुई थी ,

दुनिया इस सारी ने बड़े ताने मारे थे !

केवल एक तुम्ही ने मुझे माना था ,

परी बेटी मुझे अपनी तब , आप ही ने कहा था !

जब मैं तीन वर्ष की हुई थी ,

मेरा भी नाम एक विधालय में लिखवाया था !

अपनी उस साइकिल से सदा तुम ,

मुझे मेरे बाबुल छोड़ने और लेने आते थे !

बाबुल जब मैं पढ़ - लिख कर शिक्षक बनी थी ,

तब पुरे गाँव में आपने मिठाइयाँ बाँटी थी !

मेरे सपनों का वो छोटा सा महल ,

मेरा - पाठशाला बना कर मुझे दिया था !

बाबुल जब मेरे विवाह का समय आया था ,

मैं आँगन में आंसुओं संग सज रही थी !

जब डोली में बिठा कर मुझे आपने विदा किया था ,

तब आँसु भी आपने अपने जमीन पर गिरे थे !

रिस्ता यह बड़ा मधुर सा अब टूट रहा था ,

मेरा इस घर से नाता अब हमेसा - हमेसा छूट रहा था !

हिन्दी भाषा

इस देश में जन्मी , इस देश में पैदा हुई

मुझे अपने ही भूल गए , क्यूँ दूजे वतन से मैं आस करती !

मुझे तुम भूल गए , समझदार अब तुम हो गए

अपने को ही तुम भूल गए , लगता है बैरी तुम अब हो गए !

कोई ऐसा भी समय था , कभी ऐसा भी जमाना था

जब मेरे लिए तुम मर मिटे थे !

मुझे याद करना ही भूल गए ,

मुझे मुख से बाहर निकालना ही तुम भूल गए !

तुम आज लगता है मुझे भूल गए !

कभी ऐसा भी वक़त था, तुम्हारी माँ बनी थी मैं

कभी ऐसा भी था, तुम्हारा नाम थी मैं !

आज मुझे तुम भूल गए ,

आज मेरे शब्दों को तुम भूल गए !

कल कुछ थे और आज कुछ और हो गए

कल मेरे शब्द कुछ और थे पर आज वो मुख से कुछ और हो गए !

कल थे 'अ' आज 'A' हो गए !

कल थी 'रेखा' आज 'LINE' हो गयी !

कल तक थी 'नाम' आज 'NAME' हो गयी !

कल थी मैं तुम्हारी हिन्दी ,

पर आज तुम्हारी अपनी इंग्लीश हो गयी !

काली घटा

काली घटा छाई है , लेकर साथ अपने यह ढेरो सारी खुशियाँ लायी है

ठण्डी - ठण्डी सी हवा यह , कहती बहती चली आ रही है ,

काली घटा छाई है , काली घटा छाई है !

कोई वर्षों बाद खुश हुआ , तो कोई ख़ुशी से पकवान बना रहा

बच्चों की टोली , कभी छत पर कभी गलियों में

जोर जोर से किलकारियां लगा रही , काली घटा छाई है !

जो गिरी पहली बून्द पानी की धरती पर,

देख इस अनमोल रत्न को . किसान संग जग मुस्कुराया

और कह रहा , काली घटा छाई है !

बूंदो की रफ़्तार संग हवा भी तेज हो रही

लगता मानो अब यह कोई क्रांति का रूप ले रही !

छुपा झूट सरकार का अब समझ में आ रहा ,

कल सच लग रहा था , पर आज उनकी हर कपटी समझ आ रही !

छुपा झूट सरकार का संसार से , कोई गली टूटी

कोई गिरती ईमारत कह रही , काली घटा छाई है !

अंकुर जो फूटे न थे अब तक , वो देख सुनहरी किरण

अब बाहर अपना मुख खोल रहे !

देख यह सब बगीचे का माली ,

झूमता हुआ गा रहा , काली घटा छाई है !

.

अपनी राजनीति

हमारे देश की राजनीति आज गीली मिटटी सी नज़र आती ,

जो भी इसमें आता उसकी नज़र बुरी ही नज़र आती !

पाँच वर्ष अपने यहाँ यूँ हीं बिता दिए जाते ,

देश में क्या हो रहा , उसकी खबर किसी को नज़र ही नही आती !

जनता को देश की हालत का पता ,

फिर भी वो क्यों बुरे का साथ देते !

समय काल अपना , केवल पैसों पर बहा दिया जाता

कुर्सी अपनी की सिवाय उन्हें और कुछ नज़र ही नही आता !

किस पर विस्वास करें , किस पर नही

इस बात का हल किसी को नज़र नही आता !

हर पल नेता एक - दूजे पर आरोप लगते

खुद भी है बुरे ये जनता को बताना ही नही आता !

धन के लोभ में ये नर से वानर बन जाते

दूकानदार होते पर होले होले व्यापारी बन जाते !

कानून इनका केवल नाम का

यह शक्ति भी यें अपने अधीन रखते !

इंतज़ार रहेगा फिर , किसी महान आत्मा का

महात्मा गांधी जी तो नही , पर जरूर उनके ही जैसे किसी नेक इन्सान का !

आधुनिक वतन

देश मेरा आज परदेसी हो गया ,कल था कुछ

पर आज कुछ और हो गया ।

पाँव से लेकर केश तक मेरा यह देश विदेशी हो गया ,

युवा इस देश के लड़के संग लड़कियाँ भी

आज हर ओर से बहरी हो गए ।

संस्कृति , परम्परा सब रिवाज मेरे वतन के ,

आज हर क्षेत्र में , अपने से पराये हो गए ।

हिंदी संग सूती हर घर की ,

आज वो बात फालतू हो गयी ।

जो मुल्क कल तक रंगभरा था ,

आज वही देश बेरंग हो गया , फीका सा हो गया ।

सोने सा देश मेरा आज चांदी भी रहा नही ,

कल था खिलता कमल , पर आज गुलाब बी ही रहा नही !

कल तक था भारत देश मेरा रत्नों भरो

पर आज दुखो से भरा गरीब देश हो गया !

मुड़ होना होगा मेरा वतन का पता नही ,

पर हर अगले जमाने , वो कल वाला वतन फिर हमे जरूर याद आयेगा !

चलते रहो

चलते रहो , कहती है यह जिन्दगी

हर मोड़ पर नया कुछ सिखाती है यह जिन्दगी !

चलते रहो , कहती है यह जिन्दगी

डीग - डीग कर सम्भलना सिखाती है यह जिन्दगी !

आलस्य छोड़ निडर बनना सिखाती है यह जिन्दगी ,

दुसरों के लिए तुम जियो जग में , कहती है यह जिन्दगी !

रूठे को मनाना , रंक से राजा बनना

सब बात बतलाती है यह जिन्दगी !

बुराई के कार्य छोड़ नेक कर्म करना सिखाती है यह जिन्दगी ,

चलते रहो , हर पल कहती है यह जिन्दगी !

कमल जैसा बनना , गुलाब की तरह खिलना

सुर्यकमल की तरह चलना , पानी की तरह बेदाग़ रहना !

सिखाती है यह जिन्दगी , कहती है यह जिन्दगी !

पैसा

यह नोट है तो क्या जरा सा जो एक से शुरु होता ,

और हज़ारों पर जा खत्म ।

छोटी सी भी लालसा इसकी मेहनती को कामचोर बना देती ,

निर्जीव सा तो है यह पर कभी - कभी जीवो में भी युद्ध करा देती।

गोल सा तो है यह चाँद जैसा ,

पर चमक इसकी कुछ ही क्षण में उतर जाती।

कागच तो है यह साधारण कागच जैसा ,

पर कुछ चित्र छापकर इस पर इसकी औकात ही बढ़ा दी जाती ।

आज का युग , ईस्वर की स्तुति छोड़ ,

केवल इसकी ही माला जपता रहता ।

छुट न जाये कोई भी सिक्का ,

यह जग तो यूँ ही इसके पीछे भाग रहा होता ।

बड़े छोटे सब भेद भाव यही पैदा करता ,

तू है छोटा मैं हुँ बड़ा सब अन्तर यही तो पैदा करता ।

हर वस्तु का मोल तो यह लगा सकता ,

पर मधुर प्रेम का मोल यह भी नही लगा सकता ।

तभी तो श्री राधा जी की एक बाली पर ,

स्वयं ईस्वर कृष्ण जी भी हल्के पड़ चुके थे ।

गुरु सर्वप्रथम

शिष्य से सर्व-शक्तिमान हम हो गए ,

कल छोटे थे , पर आज हम कुछ ज्यादा ही बड़े हो गए ।

कल छोटे होते रोते थे ,

पर आज हम दुसरों को भी हसांना भूल गए ।

कल तक हमे कलम पकड़नी भी नही आती थी ,

और आज हम तलवार भी पकड़ना सिख गए ।

कल तक 'अ' , 'आ' तक का भी पता नही था ,

और आज हम वकील बन सारी धरती घुम रहे ।

कुछ समय पहले हमे अपना नाम भी लिखना नही आता था ,

पर आज हम गुरु जी का नाम ही उलटना लिखना सिख गए ।

कुछ देर पहले मुख पर, हर बात पर ‘ हाँ जी ’ थी ,

पर आज बात से पहले ही हम ‘ ना जी ’ कहना सिख गए ।

कल तक गुरु को ‘‘ईस्वर’’ या “माँ” कहकर पुकारते थे ,

पर आज हम उन्हें अच्छे शब्द भी निकालना भूल गए ।

हमारी जिन्दगी की राह में , मदद उनकी ही थी,

पर आज हम उनका हर पाठ पढ़ाया ही भूल गए ।

पढ़ाई तो नही आई , पर आज तुम ,

पर आज तुम , गुरु जी की इज़्ज़त करना ही भूल गए ।

बेटी

अगर बेटा सितारा है

तो बेटी चाँद है ।

यदि बेटा दिया है ,

तो बेटी तुम्हारी रोशनी है ।

अगर बेटा हवा है ,

तो बेटी तुम्हारी साँसें है ।

यदि बेटा चाँदी है ,

तो बेटी तुम्हारा सोना है ।

यदि बेटा राजा है ,

तो बेटी महारानी है ।

बेटा तुम्हारा जो भी हो ,

पर सच में तो बेटी ही तुम्हारा सब कुछ है !

सब रिस्तों की अहम डोर ,

बेटी ही तो वो धागा है !

करना न क्रोध इन पर कभी ,

क्योंकि बेटी ही तो कल है !

इस घर से लेकर , उस घर तक ,

बेटी ही तो तुम्हारा सच्चा बेटा है !

दो घरों की परी ,

बेटी ही तुम्हारा ताज है !

मेरी कविता में बहने वाला झरना ,

लड़की ही तो उसका किनारा है !

एक शाम

एक शाम , चुरा लूँ

अगर तुम कहो

लेकर साथ तुम्हे मैं चलूँ ,

ख्वाबों की उस दुनिया में , अगर तुम कहो

एक शाम , चुरा लूँ

अगर तुम कहो

तेरे - संग में हूँ ,

यह तुम्हे मैं बतलाऊं , अगर तुम कहो

सपनो की अपनी उस दुनिया को,

मैं पूरा करूँ ,लेकर साथ तुम्हारा

अगर तुम कहो

चले फिर हम - तुम साथ कहीं पेय पिने ,

गुलाब से बिछी उस गली से,

अगर तुम कहो

चाँद की चाँदनी में , में निहारता रहूँ तुम्हे

चाय का वो प्याला, पिता रहूँ तेरे नैनों से

अगर तुम कहो

लेकर ख्वाब तुम्हारे

मैं बुनूँ फिर एक नई ज़िन्दगी अपनी

अगर तुम कहो

प्रेम भरी उस दुनिया में

मैं राजा तुम्हे मैं रानी बनाऊँ

अगर तुम कहो

होंगे न जुदा हम फिर कभी

ये वादा आज हम तुम करें

अगर तुम कहो

वो पल

चाँद की चाँदनी वाली वो रात्रि थी ,

साथ तारों की वो बातें थी

रात वो आती मुझे याद बार - बार थी ,

वक़्त क्या था तब पता न था

नैनों में नैन और ,

हाथों में हाथ हमारे उस शाम थे

मस्ती से भरा वो मौसम था ,

शान्त सा वो तब अँधेरा था

मेरे व प्रिय के बिना ,

तब वहाँ कोई और नहीं था

जुदाई का डर भी ,

मुझे उस शाम छेड़ रहा था

अलविदा न कहदे वो ,उस शाम ,

मुझे इस बात का भी डर भी कहीं ज्यादा था

समय उस समय जल्दी - जल्दी ढल रहा था ,

मैं मदहोस तब उसकी आँखों से , शाम का वो सारा रस पी रहा था

बरस पड़ा था यह अंबर भी तब सारा ,

फूल भी थे कुछ - कुछ महकने लगे थे

टप - टप टपकती बूँदो का वो संगीत ,

तब उस शाम , हमे कहीं छेड़ रहा था

तेरे बिन

चुरा कर मेरी नींद तुम ,

चुरा कर कहीं दूर ले गयी

न होश है ,

न अब मुझे कोई खौफ है

अब तो बस मुझे ,

तुम्हारी चाहत हो गयी

सुबह से लेकर , रात सपनों तक

तुम्हारी जरूरत ही मेरी मंज़िल हो गयी

बातें करूँ भी

अब किसके साथ मैं

मेरी बातें तो अब

बस मेरी बातें हो गयी

गुमसुम से मेरे इस चेहरे पर

तेरी यादों की तस्वीर नज़र आने लगी

सवेरे जागूँ भी अब किस उद्देस्य से

मेरी तो हर सुबह अब शाम हो गयी

साँसे लेना भी अब मुझसे मुस्किल हो गया

"तेरे-बिन" यह शरीर बिन पानी मछली हो गया

कविता लिखना अब मुझसे भरी हो गया

हर शब्द है रोता , तेरे-बिन यह कलम खाली हो गया

हर रंग साजन , तेरे बिन बेरंग हो गया

जिन्दगी का हर दिन अब साजन तेरे बिन भारी हो गया

फूलों की महक धीमी पड़ गयी

तेरे-बिन साजन यह दुनिया सुनी हो गयी

प्रेम एक दर्द भी

मौत का समय, मेरे करीब आ रहा

साथ मेरा और तुम्हारा अब छूट रहा

जन्म - जन्म का जो साथ था ,

वो जुदा अब दो ही पल में हो रहा

करूँ क्या मैं इतने छोटे से पल में ,

तुम्हें निहारूँ या सवारूँ अपने नैनों से

प्रेम मेरा कैसा था तुमसे ,

क्या यह बताने तुम कल मेरे पास आओगी

शमशान पर भी बैठा तुम्हारा इंतज़ार करता रहूंगा ,

तुम जरूर आओगी , यह विस्वास में दिल में रखुँगा

रोग तुम्हें प्रेम का यह मीठा - मीठा सा लगेगा ,

मेरी जुदाई का गम , तुम्हें हर पल जरूर सतायेगा

मेरी यादों में तुम नैनों से नीर बहाओगी ,

मेरा प्रेम तुम्हें हर पल याद फिर आयेगा

इस जन्म ना सही हम तुम,

पर अगले हर जन्म फिर हम जरूर मिलेंगे

अभी हो या ना हो ,

पर कभी फिर हम जरूर मिल जायेंगे

तेरी याद फिर

कब्र से मैं , न निकल पाऊँ

पर तेरी याद , फिर मुझे बाहर निकाल लायेगी

अँधेरे भर उस माहौल से ,

तेरी यादों की बारात , फिर मुझे बाहर निकाल लायेगी

गहरी अति गहरी नींद से भी तुम ,

कब्र से फिर मुझे बाहर निकाल लाओगी

तेरे - संग जो दर्द मुझे हुआ था ,

याद अब फिर तुम मुझे करवा दोगी

साथी मेरे और समसान के मुझसे फिर पूछेंगे ,

कौन तुम्हे है इतना दिल से याद कर रहाA

तुम्ही बताओ सजना, मैं तुम्हारा नाम कैसे लूँगा

इंतज़ार साजन तुम्हारा कल भी किया आज भी ,

इंतज़ार साजन तुम्हारा मैं हर पल करता रहुँगा

मिलन हमारा फिर जरूर होगा ,

“तेरे-संग” यह रिस्ता फिर जरूर महकेगा

कुछ यूँ होना

चँदा की तरह , तुम मुस्कुराना

हवा की तरह , तुम मुझमें बहना

आहट तुम मेरे दिल में यूँ देना

जैसे नई दुनिया , अभी मेरी शुरू हुई हो

हाथ तुम अपना मेरे हाथो पर यूँ रखना

जैसे गुलाब का स्पर्श , अभी मुझे हुआ हो

नैन मेरे तेरे एक दूजे को कुछ कहते रहें

देख यह सब , तब कुदरत भी सरमा जाये

समय इस ढलते को देख , मैं कहीं कुछ खो न दूँ

तुम्हे मैं अपना , ईश्क - ऐ - बयान मोहब्बत जरूर करूँ

तुम भी अपनी पलके झुका के

मेरा दिल - ऐ - बयान जरूर स्वीकार करना

तारों की उस जग - मग में

चंदा की उस चांदनी में

रिस्ता यह हमारा, ‘‘तेरे-संग’’

सभी को बड़ा प्यारा सा लगे

मेरा साथ तुम कभी न छोड़ना , ओ मोरे साथिया

इसी वायदे से ही मैं तुम्हें विदा करूँ

उस प्रेम भरे मीठे पल का समय

मेरे लिए कुछ यूँ ही होना

याद तुम्हारी फिर आई

दिल मेरा रो रहा ,

तेरे इंतज़ार में देख मैं पिघल रहा

समय यह बड़ी तेजी से चल रहा ,

हर दिन मेरा कुछ ही यादों के सहारे ढल रहा

याद तुम्हारी फिर मुझे आई ,

वो लम्हें वो पल , यादों की कड़ी फिर मुझे याद आई

वो पहली मुलाक़ात हमारे ईश्क की ,

वो पहली मुस्कान तुम्हारे लबों की

वो पहला नाम मेरा तुम्हारे लबों से ,

आज याद सब मुझे फिर आया

वो मुझे नैनों से स्वीकार करना ,

वो हाथ का स्पर्श तुम्हारा मुझे, आज याद फिर आया

देख यह सब , दुनिया ताने मार रही ,

यह पागल तो यूँ ही किसी के पीछे फिर रहा

सँसार कुछ भी कहे साजन मेरे ,

मैं तुम्हें तलास्ता रहूँगा हर जगह कहीं - कहीं पर

दर्द भी है एक सीने में मेरे ,

तुम कहीं खो न जाओ मुझसे

जब तक मैं तुम्हारे पास आऊँ ,

तुम कहीं किसी की हो न जाओ

प्रेम

प्रेम का अहसास

जो पहली बार होता है

उस का विस्तार

दो शब्दों से नहीं होता

जब नयन दो , एक हो जाते है

तब वह भाव , यूँ बताया नहीं जाता

इस रस में डूबकर

जो आनंद होता है

उस आनंद का सार

यूँ व्यक्त नहीं होता

साँसों से बंधा यह बंधन

इस और उस जग में बड़ा बताया जाता

विरह वेदना इस नाते की अती कठोर होती

एक दूर होता और दूजा आँहे भरता रहता

जग यह अज्ञानी

प्रेम को बेकार कहता

वह नहीं जनता

यही रिस्ता तो सब रिस्तों से बड़ा होता

दो आत्माओं का मिलन है यह प्रेम

आत्मा से परमात्मा का मिलने का जरिया है यह प्रेम

सच्चाई का पथ है प्रेम

जितना सुन्दर कहो

उससे कहीं ज्यादा सुन्दर है यह प्रेम

बिन तेरे

चाहते हुए भी तुम्हें

मुझे तुम से दूर जाना पड़ रहा है

तुम्हें प्रेम करते हुए भी

मुझे अपने हृदय पर हाथ रखना पड़ रहा है

तेरी खुशी के लिए साजन

मुझे अपनी खुशी को गम में बदलना पड़ रहा है

हृदय की साँसों में बसाया तुम्हें

पर लगता आज साँसों को भी छोड़ना पड़ रहा है

पाया था तुम्हें हज़ारों दुआ कर के रब से

पर लगता है आज तुम्हें एक ही पल में छोड़ना पड़ रहा है

मैं प्रेम के मीठे भरे गीत गाया करता था

पर अब नैनों से पानी बहाना पड़ रहा है

दिल का दर्द बड़ा बेगाना बड़ा पराया

दूजा तोड़ता पर रोना खुद पड़ता

तुम्हारा प्रेम मुझे मिला नहीं

यादों के सहारे तेरे जीना पड़ रहा है

खुदा से मैं दुआ करता ,

तुम अगले हर जन्म मुझे मिलो , ओ मोरे साजना

तेरे बिना तो महबूबा मुझे जीना मुस्किल लग रहा

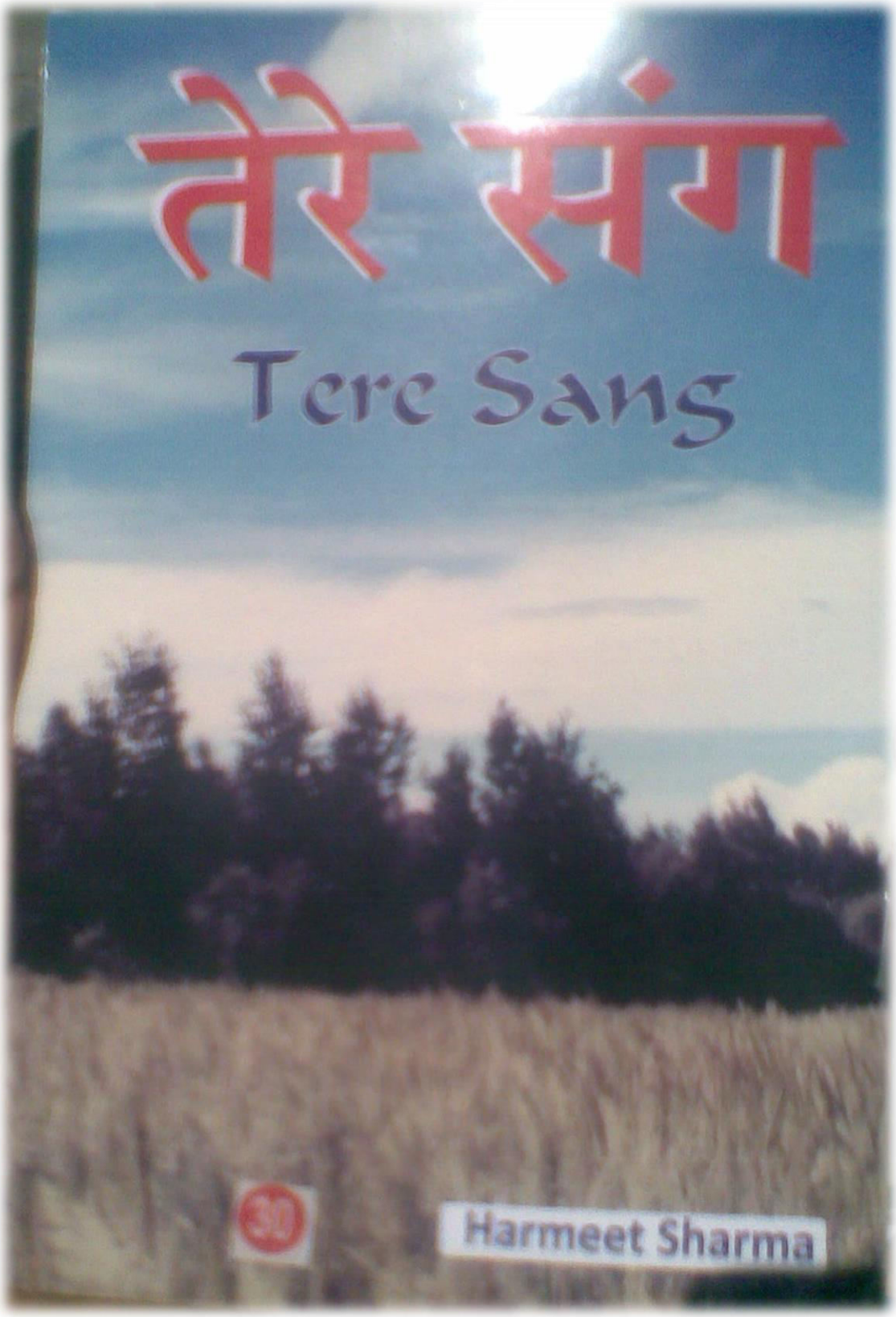

Last Cover.

Poet :- Harmeet Sharma